सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 23 अगस्त 2015, रविवार
(दुर्गापुर)

! राधा–स्वामी.!

लोग समझते हैं, अरे ये कैसा संत है, मेरे साथ तो पढ रहा था, मेरे साथ खेल रहा था, अब वो संत बन गया। सारी दुनिया संत को समझती नही है। पंण्डित दयाल मेरे गुरू थे, ये 15 साल मेरे घर में रहे। एक दिन हमारे बडे भाई सहाब आ गए हमारे घर, उन्होने इनको देखा और कहने लगा, अरे ये तो मेरे साथ पढ रहा था, ये कैसे संत बन गया। तो संतो को दुनिया पहचानती नही है। दुनिया कहती है– अगर ये गुरू है तो ये मेरे लिए कोई ना कोई चमत्कार जरूर करेगा। अगर गुरू ने चमत्कार नही किया तो गुरू फेल। एक सच्चा गुरू जो है वो चमत्कार करने नही आता।

एक बार रामकृष्ण परमहंश के पास एक आदमी आया और बोला– गुरू जी मुझे बीमारी है, इसे ठीक कर दो। गुरू जी बोले– मैं कोई डॉक्टर हूँ? मुझे खुद गले में कैंसर है, मैं अपना कैंसर ठीक नही कर सकता, तुम्हारी बीमारी कैसे ठीक करूँगा। फिर वो आदमी बोला– गुरू जी हमारे गांव में एक आदमी है, उसने मुर्दे को जिन्दा कर दिया। गुरू जी बोले– वो संत नही है, वो जादूगर है, जाओ तुम भी उस जादूगर के पास, क्योंकि संत कोई जादू नही कर सकता, वो प्रकृति के कानून के खिलाफ कोई खिलवाड नही कर सकता है।

परमदयाल जी महाराज हर सत्संग में कहते थे, जब मैं वहाँ पहुँचूगा, तो मैं सबको बताऊँगा कि मैने वहाँ क्या देखा? एक बार वो वहाँ पहुँच गए, तो लोगो ने उनसे पूछा– महाराज जी बताओ वहाँ क्या है? वो बोले मैं क्यों बताऊँ? परमदयाल जी महाराज कहते हैं कि मैं चाहूँ तो सारे संसार को 2 मिनट में पलट सकता हूँ, लेकिन मैं क्यों पलटू? मैं प्रकृति के साथ क्यों खिलवाड करूँ? सबको अपने–2 कर्म भुगतने दो, इसी में सबका भला है, मैं प्रकृति के साथ क्यों खिलवाड करूँ? तो जो भी सच्चा संत होगा वो प्रकृति के साथ कभी खिलवाड नही करेगा। क्योंकि जिसने भी प्रकृति के साथ खिलवाड किया, उसकों Punishment, उसका कर्म बन गया और उसे उसको भोगना है। जिसके जो कर्म हैं, उसे उनको भुगतने दो, हँसी–खुशी भुगतने दो, इसी में उसका भला है, इससे उसके कर्म कटते जाएँगे। अगर वो अपने कर्मों से बचने के लिए किसी सिद्ध पुरूष या तांत्रिक के पास गया, तो वो तांत्रिक उसके दुख को दूर नही करता है बल्कि थोडा आगे के लिए टाल देता है, क्योंकि कोई किसी के कर्म काट नही सकता है, जिसने जो कर्म किए हैं उन कर्मों को वही काट सकता है। हम गुरू जी के पास जाते हैं, गुरू जी आपके कर्म नही काटते हैं बल्कि आपसे ही कर्म कटवाते हैं। कैसे कटवाते हैं? सारे संसार में कर्म काटने का एक ही तरीका है, वो तरीका है– सुमिरन, ध्यान, भजन। सिर्फ यही एक तरीका है हमारे कर्म काटने का और ये रास्ता कौन बताता है? ये रास्ता गुरू बताता है। बेटा तू सुमिरन, भजन, ध्यान कर, तेरे कर्म कटते जाएँगे। ये तरीका सिर्फ गुरू ही बताएगा आपको, और कोई चाहे वो कितना ही बडा डॉक्टर हो या कितना ही बडा साईंटिस्ट हो, वो आपके कर्म नही काट सकता। क्या डॉक्टर ऑपरेशन करके आपके कर्म काटेगा, नही काटेगा, ऐसी कोई विधि नही है। तुम्हारा गुरू ही तुम्हारे कर्म काटेगा और वो खुद नही काटेगा बल्कि तुमसे ही कटवायेगा, कोई किसी के कर्म नही काट सकता है। हाँ कभी–कभी गुरू किसी पर दया करता है और उसके कर्म ले लेता है लेकिन इससे क्या है? वो कर्म फिर गुरू को भुगतने पडते हैं। अक्सर आप देखते हैं जितने भी बडे गुरू हुए हैं उनको अंत में बहुत तकलीफ होती है, क्यों? क्योंकि संत दिल के बहुत भावुक होते हैं। किसी का दुख सहन नही कर पाते और उनका कष्ट दूर कर देते हैं लेकिन वो कष्ट कहाँ जाएगा? क्योंकि कर्म नष्ट नही होते हैं, ये प्रकृति का कानून है,

उसी में तुम्हारा फायदा है। तुम गुरू से आर्शीवाद ले लो, वो तुम्हारी सूली का काँटा बना देगा। जब आप गुरू की शरण में आते हो, तो वो आपकी सूली का काँटा कर देगा।

ये हमारा ड्राईवर हैं ना राजवीर, 24 घण्टे मेरी सेवा में लगा रहता है। परसों ये अपनी मोटरसाईकिल से आराम से अपनी साईड में जा रहा था। एक सिरफिरा आ गया, 80 की स्पीड से मोटरसाईकिल चला कर आ रहा था और राजवीर की मोटर साईकिल में टक्कर मार दी। राजवीर एक तरफ गिरा और बाईक दूसरी तरफ, राजवीर के हाथ में जरा सी चोट आ गई, नही तो इतने तेज एक्सीडेंट में कुछ भी हो सकता था, लेकिन सूली का काँटा हो गया।

जाके सिर पे हाथ गुरू का, बाल ना बाँका होए।

जिसके सिर पे गुरू का हाथ है उसका बाल भी बाँका नही हो सकता, कभी–2 गुरू सपने में भी कर्म कटवा देता है। कभी हम देखते हैं कि हम पहाड से गिर रहे हैं, या हमारे साथ ऐक्सीडेंट हो रहा है, तो समझो गुरू ने आपके कर्म काट दिए। लेकिन गुरू उनके कर्म काटता है, जो गुरू के 100प्रतिशत शरणागत हो जाता है, जब आप गुरू से प्रेम करने लग जाते हैं, तब गुरू कहता है–

तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।

जब आपने गुरू को सारी चिंताएँ दे दी और आपने गुरू से प्रेम किया, तब गुरू फँस जाता है। गुरू कहता है– अरे इसने तो सब कुछ मुझ पर छोड दिया, अब तो इसके लिए कुछ करना ही होगा और जब गुरू ने एक बार हाथ पकडा फिर गुरू कभी हाथ नही छोडता। लेकिन गुरू ऐसे ही हर किसी का हाथ नही पकडता है, पहले उसे परखेगा, उसकी कई बार परीक्षा लेगा, वो आपकी परीक्षा लेगा और आपको पता भी नही चलेगा, गुरू देखता रहता है ये कितने पानी में हैं। इसका कितना भाव है और गुरू जब देख लेता है कि हाँ ये अधिकारी है फिर गुरू उसका हाथ कभी नही छोडता। ये (शब्दानंद जी महाराज) मुझे जान गए थे कि मैं अधिकारी हूँ, इन्होने मेरा हाथ पकड लिया और फिर कभी छोडा नही। जब तक उनमें आखिरी साँस थी, वो मुझे याद याद करते रहे, ये मुझे समझ गय थे, पता नही इन्होने मेरी कितनी परीक्षा लीं होंगी। जब इन्होने मुझको आचार्य बनाया तो मेरी बीबी ने कहा– महाराज जी आपने इनको आचार्य क्यों बनाया? इनको तो कुछ पता ही नही है, ये सत्संग अगर एक ने नही भुगता तो जो उसका कारण है नही भुगमने का, वो भुगतेगा। क्योंकि कर्म तो भुगतना ही है। एक कर्म पैदा हो गया इस प्रकृति में, उसे आप नष्ट नही कर सकते, उसे भुगतना ही भुगतना है। जितने भी बडे–2 गुरू हैं, महात्मा हैं, रामकृष्ण परमहंश को गले में कैंसर था, ऐसा क्यों था? क्योंकि ये सबके कर्म अपने ऊपर लेते हैं और कष्ट उठाते हैं। अगर आप गुरू से प्रेम करते हैं तो गुरू से कभी कुछ मत माँगो। अगर तुम गुरू से कुछ माँगते हो, तो तुम गुरू के दुश्मन हो। क्यों? क्योंकि तुम गुरू से कुछ माँगोगे और वो तुम्हें देगा और फिर वो गुरू को भुगतना पडेगा। इसलिए जितनी भी कोशिश हो अपने कर्मों को खुद काटो, देना भी नही जानते हैं, पता है शब्दानंद महाराज ने क्या कहा? उन्होने कहा– एक दिन ये मुझसे अच्छा सत्संग देंगे। उन्होने मुझे आर्शीवाद दे दिया, क्योंकि उन्होने मुझे परखा था, लेकिन इसमे थोडा दोष मेरा भी है, जब मानवदयाल जी थे, तो उन्होने जाते–2 मुझसे कहा था कि शब्दानंद को कभी नही छोडना, बस इतना ही कहा उन्होने और मैंने अंत तक उनका साथ नही छोडा, वो समझो नामदान था मेरे लिए और वो नाम दान काम कर गया। इसलिए जब गुरू एक बार किसी का हाथ पकड लेता है फिर छोडता नही। मेरे शरीर में रोग लगे हुए हैं, हार्ट की बीमारी है, आँखों में Problem है, अब शुगर भी हो गया है। ये क्या है? ये समझो मेरे कर्म कट रहे हैं। धीरे–2 मेरे सारे कर्म कट रहे हैं, शरीर के Thru, तो जब हमारे शरीर में तकलीफ आती है तो हमें दुखी नही होना, क्यों? क्योंकि ये हमारे कर्म है और हमें ये भुगतना ही है।

राधास्वामी की दया से, नर जीवन करलो सुफल।

काटो बंधन भरम के, त्यागो कारागार को।।

मैं हर सत्संग में यही कहता हूँ कि ये संसार एक जेल है। हम समझते हैं कि हम आजाद पंक्षी है, कोई आजाद पंक्षी नही है। हम जेल में है और यहाँ का जेलर काल है, वो चाहता है कि कोई दयाल के पास ना जाए। आप समझते हैं कि आप संसार में आजाद हैं, जो चाहे कर सकते हैं, नही कर सकते हैं। किसी औरत के 8–9 लडकियाँ हो जाती हैं, लडके के चक्कर में, तो क्या उसके हाथ में है? नही है। मेरा पोता है जन्म से ना बोलता है, ना चलता है, उसका शरीर काम नही करता, वो माँस का एक लुथरा जैसा है, बैड पर पडा है, तो क्या ये एक कारागार नही है, उसने ऐसे कौन से कर्म किए, जो उसको ऐसा जन्म मिला, तो फिर ये संसार एक जेल ही है। ये संसार एक जेल है और जेल में कैदी क्या करते हैं? वो अपने–2 जुर्मों की सजा भुगतते हैं, हम भी वही कर रहें हैं, अपने–2 कर्मों की सजा भुगत रहे हैं। तो क्या फर्क है इस जेल में और संसार की जेल में? संसार की जेल में कभी–कभी जेलर को दया आती है कि चलो इसकी सजा पूरी होने में 6 महीने रह गए हैं, इसे छोड दो। लेकिन काल की जेल में कोई दया नही है, आपको जो कर्म काटना है, वो काटना ही है। लेकिन काल का एक बहुत बडा दुश्मन है, वो है दयाल, क्योंकि जो दयाल के पास जाता है, काल उसे छोड देता है।

कर लो संत संगत गुरू की, ज्ञान की दृष्टि खुले।
लाओ तट पर नाव अपनी, छोडकर मझधार को।।
गुरू ही तुम्हारे बंधन को काटेगा और तुमको इस भवसागर से छुटटी दिलाएगा।

!! राधा–स्वामी !!